8/10

Name = Atul Shukla (writer)

Group Partner = Bhanu Pratap Singh

Branch = Computer Science.

College = Govt. Nowgong Polytecnic College Nowgong, Distt.- Chhatarpur (M.P)

लेखन प्रतियोगिता

"हेलमेट"

8/10 Ag

#. रूपरेखा :- (1) प्रस्तावना
(2) वैदिक काल मे हेलमेट का इतिहास
(3) वर्तमान काल मे हेलमेट का इतिहास
(4.) सुरक्षा कवच एवं बनावटी का तौर-तरीका
(5.) BIS द्वारा हेलमेट की बनावटी का तरीका
(6.) उपसंहार

1.) प्रस्तावना :- हेलमेट एक सुरक्षात्मक सामग्री का एक रूप है जो चोटो से सिर की रक्षा के लिए पहना जाता है। अधिक विशेष रूप से, एक हेलमेट मानव मस्तिष्क की रक्षा करने में खोपडी की सहायता करता है। सुरक्षात्मक कार्य के अलावा प्रतीकात्मक हेलमेट कभी-कभी उपयोग होते है

2.) वैदिक काल मे हेलमेट का इतिहास :- हेलमेट का सबसे पुराना ज्ञात प्रयोग सुमेर सभ्यता मे 2400 ईसा पुर्व मे दिखाई देता है। तब मीटी चमडे या ऊन की टोपी पर ताम्र पत्र जोड़ कर हेलमेट पहनते थे और युद्ध में तलवार से वार और तीर के हमले से बचाव करते थे। भारत में 1600 ईसा पुर्व के वेदो मे भी हेलमेट का उल्लेख है जहा उन्हें "शिप्र" कहा गया है। अब हेलमेट अक्सर हल्के प्लास्टिक सामग्री से बने होते है।

3.) वर्तमान काल मे हेलमेट का इतिहास :- जनसंख्या बढ़ने के साथ-साथ दो पहिया वाहनो की बिक्री अधिक हो रही है | वर्तमान काल में हो रही अधिक वाहन दुर्घटना इसी का कारण है और लोग लोक हेलमेट का उपयोग नही करके वाहन चलाते है जिससे घातक दुर्घटनाएँ होती है जिसमे लोगो की मृत्यु तक हो जाती है | इसलिए वर्तमान काल मे हेलमेट का इस्तेमाल करना बहुत जरूरी है एवं इस पर कड़ी नियम भी लागू किये गए |

4.) सुरक्षा कवच एवं बनावटी का तौर-तरीका :- हेलमेट हमारे लिए एक प्रकार से सुरक्षा कवच सिद्ध घोषित हुआ है | हेलमेट लगाकर वाहन (दो पहिया) चलाने से होने वाली घातक एवं दर्दनीय दुर्घटनाओ से बचा जा सकता है अर्थात यदि हेलमेट नही लगाकर वाहन चलाते है और धोखे-धड़ाके से दुर्घटना होती है तो हमारा मस्तिष्क और मेरूरज्जु आघात हो जाएँगे | यदि मेरूरज्जु घा॰ आघात होती है तो हमारी प्रतिवर्ती क्रियाएँ अर्थात अनैच्छिक क्रियाएँ सही ढंग से अपने कार्य को संपादित नही कर पाएंगी | अगर हेलमेट का इस्तेमाल करते है तो इन सभी घातक दुर्घटनाओ से बचा जा सकता है |

5.) BIS द्वारा हेलमेट की बनावटी का तरीका :- BIS एक ऐसी संस्थान है जहाँ सभी वस्तु की जाँच की जाती है एवं उस वस्तु की बनावटी, तौर-तरीका एवं फायदेमंद अच्छे था ज्यादा होते है तो BIS द्वारा उस वस्तु पर ISI मार्क [ISI] लगा दिया जाता है | इसी प्रकार BIS द्वारा हेलमेट

की बनावटी एवं फायदे बताये हैं कि हेलमेट कैसा बनाया जाना चाहिए। सर्वप्रथम हेलमेट का वजन 1.2 kg से ज्यादा नही होना चाहिए। हेलमेट को ऊर्जा को अवशोषित करने और प्रभाव बल को कम करने के लिए डिजाइन किया गया होना चाहिए, ताकि हमें गंभीर चोट न लगे। हेलमेट उन्ही सामग्रियो से बना होना चाहिए जिनका उपयोग कार की सीट में किया जाता है, जिन्हे उपयोग के बाद पुनर्नवीनीकरण किया जा सकता है, जिससे वे पर्यावरण के अनुकूल हो सके। यदि हेलमेट ज्यादा वजन का हो तो उसे पहनने से हमारी गर्दन लचीली एवं और दुर्घटनाए हो सकती है।

6.) उपसंहार :- लाल के दिनों में, दोपहिया वाहन की सवारी में हेलमेट के उपयोग का समर्थन और विरोध करने वाले जीवंत तर्कों ने इसे सार्वजनिक बहस के लिए एक लोकप्रिय मुद्दा बना दिया है। दोपहिया वाहन का उद्देश्य अलग-अलग देशो में अलग-अलग होता है। हेलमेट का आविष्कार सन् 1975 में गोटलिब डेमलर ने साइकिल के लिए किया था। हेलमेट का हिन्दी शाब्दिक अर्थ है - जो हमारे सिर, कान, ठोढ, मुंह, आँख और दांत की सुरक्षा प्रदान करना इसे अंग्रेजी में हेलमेट कहते हैं हेलमेट हमको खतरनाक दुर्घटनाओं से बचने के लिए सुरक्षा प्रदान करता है।